

पूर्वी उत्तर प्रदेश में यूकेलिप्टस की खेती: किसानों के लिए एक मार्गदर्शिका



**रमेश कुमार यादव¹ अरविन्द
कुमार त्रिपाठी² मयंक³
श्रीकांत⁴**

सिल्विकल्चर और कृषिवानिकी
विभाग
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं
प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कुमारगंज, अयोध्या 224229
उत्तर प्रदेश

यूकेलिप्टस वंश से संबंधित यूकेलिप्टस के पेड़, लकड़ी, लुगदी, आवश्यक तेलों और पर्यावरणीय लाभों में अपने व्यावसायिक मूल्य के लिए व्यापक रूप से उगाए जाते हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश में, जहां कृषि भूमि प्रचुर मात्रा में है, किसान तेजी से वैकल्पिक आय स्रोत के रूप में यूकेलिप्टस की खेती की ओर रुख कर रहे हैं। इस गाइड का उद्देश्य पूर्वी उत्तर प्रदेश में नीलगिरी के पेड़ों की खेती में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करना है, जिसमें साइट चयन, रोपण, रखरखाव और कटाई जैसे आवश्यक पहलुओं को शामिल किया गया है।

1. साइट चयन:

यूकेलिप्टस की खेती के लिए अच्छी नमी बनाए रखने वाली अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी चुनें।

यूकेलिप्टस के पेड़ 5.5 से 7.5 पीएच रेंज वाली रेतीली दोमट या दोमट मिट्टी पसंद करते हैं।

पर्याप्त सूर्य के प्रकाश वाले स्थान का चयन करें, क्योंकि यूकेलिप्टस के पेड़ पूर्ण सूर्य के प्रकाश में पनपते हैं।

2. प्रजाति चयन:

अपने विशिष्ट उद्देश्यों, जैसे लकड़ी उत्पादन, लुगदी लकड़ी, या आवश्यक तेल निष्कर्षण के

आधार पर उपयुक्त नीलगिरी प्रजातियों का चयन करें।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में उगाई जाने वाली सामान्य यूकेलिप्टस प्रजातियों में यूकेलिप्टस टेरिटिकोर्निस (ब्लू गम), यूकेलिप्टस सिट्रिओडोरा (नींबू-सुगंधित गोंद), और यूकेलिप्टस ग्लोब्युलस (तस्मानियाई ब्लू गम) शामिल हैं।

3. पौधारोपण:

स्थापना के लिए पर्याप्त मिट्टी की नमी सुनिश्चित करने के लिए बरसात के मौसम (जून से अगस्त) के दौरान यूकेलिप्टस के पेड़ लगाएं।

उचित जड़ प्रवेश और जल वितरण की सुविधा के लिए जुताई और समतल करके भूमि तैयार करें।

रोपण के लिए उपयुक्त आकार (आमतौर पर 45 सेमी x 45 सेमी x 45 सेमी) और दूरी (4 मीटर x 4 मीटर या प्रजातियों के लिए अनुशंसित) के गड्ढे खो दें।

उर्वरता और नमी बनाए रखने में सुधार के लिए मिट्टी में जैविक पदार्थ जैसे कि गोबर या कम्पोस्ट शामिल करें।



4. रखरखाव:

यूकेलिप्टस आधारित कृषिवानिकी प्रणाली

स्वस्थ वृद्धि और विकास को बढ़ावा देने के लिए, विशेष रूप से शुष्क मौसम के दौरान, नियमित सिंचाई प्रदान करें।

पोषक तत्वों और पानी के लिए प्रतिस्पर्धा को कम करने के लिए मैन्युअल निराई या मल्टिचिंग के माध्यम से पेड़ों के आसपास खरपतवार को नियंत्रित करें।

कीटों और बीमारियों की निगरानी करें, और उचित कीट प्रबंधन प्रथाओं के माध्यम से किसी भी समस्या का तुरंत समाधान करें।

मृत या रोगग्रस्त शाखाओं को हटाने और इष्टतम लकड़ी की

उपज के लिए छतरों को आकार देने के लिए आवश्यकतानुसार पेड़ों की छंटाई करें।

5. कटाई:

प्रजातियों और वांछित लकड़ी की गुणवत्ता के आधार पर, यूकेलिप्टस के पेड़ों की वृद्धि के 6 से 8 वर्षों के बाद लकड़ी के उत्पादन के लिए कटाई की जा सकती है।

लकड़ी में रस प्रवाह और नमी की मात्रा को कम करने के लिए शुष्क मौसम के दौरान कटाई का कार्य करें।

प्रबंधन के उद्देश्यों और बाजार की मांग के आधार पर उचित कटाई

तकनीकों का उपयोग करें, जैसे कॉपिंग या क्लीयर-कटिंग।

निष्कर्ष:

पूर्वी उत्तर प्रदेश में यूकेलिप्टस के पेड़ों की खेती से किसानों को महत्वपूर्ण आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ मिल सकते हैं। इस गाइड में उल्लिखित दिशानिर्देशों का पालन करके, किसान यूकेलिप्टस के पेड़ों को सफलतापूर्वक उगा सकते हैं और स्थायी भूमि उपयोग प्रथाओं में योगदान करते हुए अपने विभिन्न व्यावसायिक अवसरों का लाभ उठा सकते हैं।